भजन

तर्ज..आवाज देके हमें तुम बुलाओ

ईमान पक्का धनी पर ले आओ,
जो दिल में बसे है उन्हें जान जाओ

1) धनी तो तुम्हें खुद ही देख रहे है
कहते हैं क्या हम क्या कर रहे है
हैं दिल अपना शीशा न उनसे छिपाओं

2)जो छल से परे है उन्हें कौन छलेगा
साँच के आगे न झूठ चलेगा
अगर सत को पाना है निकल छल से जाओ

3) ऐसा न कोई, मेहरबान मिलेगा
यह सुख हक के दिल का यहाँ कौन देगा
यह वाणी के सागर पिओ और पिलाओ

4) यह वाणी परख है इससे परख लो
अगर चुभ रही रूह को तुम निरखो
आप जगो और सबको जगाओं